IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय इतिहास लेखन में क्षेत्रीय इतिहास के महत्व की भूमिका मध्य प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में

Nihal Kumar(Jaiswal)

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय इतिहास लेखन में क्षेत्रीय इतिहास के महत्वपूर्ण योगदान की विस्तृत चर्चा प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से मध्य प्रदेश के संदर्भ में। अध्ययन इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि क्षेत्रीय इतिहास समग्र राष्ट्रीय इतिहास की आधारशिला है और "बूंद-बूंद करके ही घड़ा भरता है" के सिद्धांत के अनुसार, स्थानीय ऐतिहासिक घटनाओं का संकलन राष्ट्रीय इतिहास को पूर्णता प्रदान करता है। मध्य प्रदेश के संदर्भ में, यह क्षेत्र गोंड, भील, चंदेल, परमार, मौर्य, गुप्त, मालवा सल्तनत, मराठा, मुगल और ब्रिटिश शासन का केंद्र रहा है। शोध में डॉ. उपाध्याय और डॉ. शिवनारायण यादव जैसे स्थानीय इतिहासकारों के योगदान को रेखांकित किया गया है, जिन्होंने अभिलेखों, सिक्कों और पुरातत्व सामग्री के माध्यम से क्षेत्रीय इतिहास को प्रामाणिकता प्रदान की है। अध्ययन यह स्थापित करता है कि क्षेत्रीय इतिहास केवल स्थानीय घटनाओं का विवरण नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों में व्यापक समझ प्रदान करता है। वर्तमान समय में इतिहास के विस्मरण की चुनौती के बीच, यह शोध क्षेत्रीय इतिहास लेखन की आवश्यकता और इसकी व्यावहारिक उपयोगिता को प्रतिपादित करता है।

मुख्य शब्द: क्षेत्रीय इतिहास, मध्य प्रदेश, भारतीय इतिहास लेखन, स्थानीय राजवंश, सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक अनुसंधान, परमार राजवंश, चंदेल राजवंश, सिंधिया, होल्कर, इतिहास दर्शन, प्रामाणिक स्रोत, अभिलेख अध्ययन, सामाजिक इतिहास, राष्ट्रीय चेतना, विरासत संरक्षण

प्रस्तावना:

क्षेत्रीय इतिहास, समग्र इतिहास के उस स्थान की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है, जहां से इतिहास लेखन की प्रारंभिक स्थिति उत्पन्न होती है । जब क्षेत्रीय इतिहास की कड़ियाँ जुड़ती हैं, तो स्वतः ही समग्र इतिहास का प्रकट्य होता है। कहा भी गया है - "बूंद-बूंद करके ही घड़ा भरता है।" और क्षेत्रीय इतिहास, समग्र इतिहास की नींव है, इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता ।

विषय के चयन का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्रीय इतिहास लेखन की वर्तमान प्रवृत्तियों को जानना है। इस विषय के चयन के पश्चात् मुझे जिन प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, उनमें सर्वप्रथम है लोगों द्वारा दिग्भ्रमित किया जाना, प्रामाणिक स्त्रोतों की अनुपलब्धता, उपेक्षा आदि।

इतिहास के प्रति अवधारणा की एक विशेषता यह भी है कि आरंभ से इसे केवल पश्चिमी विद्वानों से ही सम्बद्ध किया गया था। जबकि भारतीय इतिहासकारों के विषय में यह भ्रांति थी कि उनके पास कोई ऐतिहासिक दृष्टि नहीं है। पौराणिक कथाओं के प्रमाण से उन्हें अत्यधिक काल्पनिक एवं तिथिक्रम ज्ञान रहित इतिहासकार माना गया। लोवेस डिकिंसन ने यह बात स्पष्टतः प्रसारित की है कि हिन्दू इतिहासकार नहीं थे।[1] उनका समर्थन डॉ. हीरानंद शास्त्री[2] ने किया एवं विरोध डॉ. गोविन्द चंद्र पाण्डे[3] ने। डॉ. चौबे ने भी कहा है कि प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीयों में इतिहास की अवधारणा रही है[4]। उन्होंने भारतीय इतिहासकार का स्वरूप व्यक्तिवादी बताया है।

क्षेत्रीय इतिहास का महत्व यह होता है कि यह समग्र इतिहास को पूर्ण करने में अहम भूमिका अदा करता है। यह एक संयोग है कि अखण्ड भारत पर कभी भी एक राजवंश का राज्य नहीं रहा। अनेक प्रादेशिक राजा और राज्य हमेशा हमारे देश में विद्यमान रहे। दिल्ली के सुल्तानों का काल रहा हो या यशस्वी मुगलों की बादशाहत का युग कभी भी भारत की संपूर्ण धरती पर एक छत्र राज्य स्थापित नहीं रहा। क्षेत्रीय भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, वस्त्राभूषण व सांस्कृतिक परम्पराएँ बहुत समृद्ध होती है, जो प्रादेशिक इतिहास से प्रतिबिंबित होती हैं। क्षेत्रीय अवधारणा ने ही आर्थिक सामाजिक इतिहास लेखन को बल प्रदान किया है। शहंशाहों के ठाट-बाट ही इतिहास नहीं है, अपितु उनके लिये मर मिटने वाले योद्धाओं, उनके खजाने भरने वाले कृषकों, व्यापारियों व मजदूरों का क्षेत्रीय इतिहास भी समग्र इतिहास की श्रृंखला को पूर्ण करता है। यह विशाल भारत के सामाजिक स्वरूप को समझने तथा जोड़ने वाली एक कड़ी है।[5]

[1]Dickinson & Lowes Goldsworthy, An Essay on the Civilisations of India, China & Japan : 1862-1932 , pp 15

[2]अध्यक्षीय भाषण ऑफ इण्डिया ओरिएंटल कान्फ्रेंस पटना, हीरानंद शास्त्री, 1965

[3]Pandey, Govind Chandra. इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धांत. Hindi. Rajasthan Hindi Granth Academy, 2003 , pp. 48

[4]Chaube, Jharkhande. इतिहास दर्शन. Hindi. Vishwavidhyalaya Prakashan, pp 58

[5] Nivami, K.A. “Punjab History Conference (Patiyala, 1973).” अध्यक्षीय भाषण. Patiyala, India, pp 19

अतीत एवं वर्तमान के मध्य निरंतरता बनाए रखने के लिये इतिहास लेखन प्रभावी माध्यम है। इतिहास, इतिहासकार द्वारा लिखी गई समय की लेखनी है, जो मानव सभ्यता के विकास, उसकी विशिष्टताओं एवं सभ्यता पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों का उल्लेख करता है। यह एक विस्तृत पूर्ण नयन गोचर का भाग है।[6]

मध्य प्रदेश का इतिहास प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में बँटा है—यह क्षेत्र गोंड, भील, चंदेल, परमार, मौर्य, गुप्त, मालवा, सल्तनत, मराठा, मुगल और ब्रिटिश शासन जैसी अनेक शक्तियों का केंद्र रहा है।

क्षेत्रीय इतिहास लेखन की भूमिका

स्थानीय राजवंशों- जैसे परमार, चंदेल, सिंधिया, होल्कर—के इतिहास से क्षेत्रीय नेतृत्व, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, और स्थानीय समाज की गतिशीलता का अध्ययन होता है।

डॉ. उपाध्याय क्षेत्रीय इतिहास को केवल तथ्यों का संग्रह नहीं मानते, बल्कि वह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भों के साथ व्याख्या पर जोर देते हैं। वह अपनी पुस्तक **"भारतीय चेतना और विकास"**[7] में लिखते हैं
देश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक धरोहर के प्रति विद्यार्थियों में जागरुकता उत्पन्न कर उनकी राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित नया आधारभूत पाठ्यक्रम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर से प्रारम्भ किया गया। इसके अंतर्गत ऐसी पाठ्यपुस्तक की रचना की आवश्यकता हुई जो देश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और संवैधानिक तत्त्वों के साथ ही जीवन मूल्यों का परिचय भी विद्यार्थियों को कराए। अतः प्रस्तुत पुस्तक विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखित एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा प्रकाशित है। प्रस्तुत पुस्तक का एक अंश डॉ. उपाध्याय द्वारा लिखा गया है। अध्याय दो में भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराया गया है, जो कि अनेक रूप से परिभाषित की गई है। इसका प्रारंभ क्षेत्रीय इतिहास को महत्व देते हुए किया गया है।

मध्य प्रदेश में एक बहुत प्रसिद्ध इतिहासकार हैं जिनका कथन है "क्षेत्रीय इतिहास लेखन राष्ट्रीय इतिहास को लोकाभिमुख और यथार्थपरक बनाता है, क्योंकि इसमें जनजीवन, संस्कृति, और समाज की वास्तविक छवि उभरकर सामने आती है।" उन्होंने क्षेत्रीय इतिहास को बल देते लेखों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला, भारत के ग्रामीण अंचल से लेकर विश्व युद्ध की रहस्यात्मक घटनाओं का विवरण उनके लेख के विषय बने।[8]

मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय इतिहास लेखन और शोध को व्यावहारिक, प्रामाणिक तथा समावेशी दिशा देने में डॉ. शिवनारायण यादव का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा है। स्थानीय अभिलेख व कई रियासतों के सिक्कों का डॉक्टर यादव द्वारा संकलन किया गया है। सिक्कों में मुगलों, मांडू सुल्तानो, दिल्ली सुल्तानों, ईस्ट इंडिया कंपनी, होलकर, सिंधिया, धार, झाबुआ, रतलाम आदि सिक्के प्रमुख हैं। प्राचीन सिक्के भी संकलन में शामिल है, जिसमें नर्मदा तट पर स्थित ग्राम बद्दल अंजड़ से डॉक्टर यादव को प्राप्त सिक्के विशेष उल्लेखनीय है। अपनी प्रत्येक

[6] Grovar, B.R. "Punjab History Conference (Patiyala, 1985)." अध्यक्षीय भाषण. Patiyala, India, pp 9
[7] Dr. Upadhyay भारतीय चेतना और विकास pp 2-21.
[8] Joshi, Jyoti. मध्य भारत के अग्रणी इतिहासकार एवं उनका इतिहास दर्शन. Hindi. International Educational Applied Journal, pp 225.

कृतियों के प्रति डॉक्टर यादव ने प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं और उन्हें अपनी पुस्तकों में उल्लेखित करके उन्होंने क्षेत्रीय इतिहास की समग्र इतिहास में भूमिका को दर्शाया है। भले ही एक क्षेत्रीय इतिहासकार लोगों के मन-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव न छोड़ पाए, लेकिन डॉक्टर यादव ने जिस तरह अंधेरों को रोशनी में बदलने का प्रयास किया, वह आश्चर्यजनक है।

क्षेत्रीय इतिहास लेखन से संबंधित वर्तमान में हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या क्या है?

इतिहास का पुनः स्मरण हर जगह जरूरी है क्योंकि हम इतिहास को विस्मृत कर रहे हैं। माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय ने रतौना आंदोलन पर जो पुस्तक निकाली, उसमें उल्लेख किया है कि इतिहास ने इस घटना का अनदेखा किया है। विस्मरण का यह भयंकर काल है। वैसे हमने अपनी स्मृतियों को सहेजा नहीं है। एक है जानना और एक है मानना। कुछ अवसरों को मनाते हैं, कुछ को जानते हैं। लेकिन न मानने से बड़ा अपराध है न जानना। हमारी युवा पीढ़ी इतिहास को जान ही नहीं रही है। तकलीफ इसी बात की है और यह हमारे लिए एक सबसे बड़ी चुनौती बन चुकी है।

इंग्लैण्ड के प्रथम प्रधानमन्त्री राबर्ट वालपोल ने अपने सचिव से पूछा था-'क्या पढ़ूं?' इस पर जब उसने इतिहास का अध्ययन करने को कहा तो वह तत्काल बोल पड़े - 'अरे! इतिहास मत पढ़ो, मुझे पता है कि वह झूठ होगा।' (Oh! don't read history, for that I know must be false)। इसी भांति फ्रांस के शासक नेपोलियन ने भी माना कि इतिहास क्या है, बल्कि एक मानी हुई गप्प है, जिस पर सब सहमत हैं'।(What is History, but a fable agreed upon)। अतः पाश्चात्य दर्शन और इतिहास में कई लोगों की बहुत पहले से ही नकारात्मक सोच रही है।[9] [10]

क्षेत्रीय इतिहास की महत्ता सर्वत्र है। वह न तो हीन भावना से ग्रसित है, न ही असफल, अपितु यह समग्र इतिहास का वह अंश है, जिसकी विशिष्टता को स्वीकार किया जाना आवश्यक हो गया है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जिनकी पुष्टि उनके क्षेत्रों के प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर की जाती है, तब कहीं बाद में वे इतिहास के अंश बन पाते हैं। जब इतिहास हृदय की अनुभूतियों और विवेकजन्य चिंतन को आत्मसात करता है, तभी वह जनमानस की अभिव्यक्ति बनता है। हमारे राष्ट्रीय ग्रंथ 'गीता' के 13 वें अध्याय के प्रथम एवं द्वितीय श्लोक में भी वर्णित है कि -

"क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ ययोर्ज्ञानं यत्तज्जनं मतं मम॥ 2 11" 2 [11]

अर्थात श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं, कि क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के भेद का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है एवं

"तत्क्षेत्रं यच्च यदृच्छ यदिकादि यत्श्च यत्।"

[9] Voltaire, All the ancient histories, as and our wits says, are just fables that have been agreed upon.
[10] Bierre Ambrose, History an account mostly false of events mostly unimportant which are brought about by rulers mostly knaves, and soldiers mostly fools (The Devil's Dictionary)
[11] महाराज रामसुखदासजी. श्री मद्भागवत गीता. सहायक संजीवनी, संवत 2047, pp 777

सच यो यत्प्रभावश्य तत्समासेन में श्रृणु। 3 आईपी 2 (बी)[12]

अर्थात हे अर्जुन वह क्षेत्र जो है, जैसा भी है और जिससे जो पैदा हुआ है, वह महत्वपूर्ण है तथा प्रभाव वाला है। जिसका विवरण मैं तुझे बताता हूँ।

अतः क्षेत्रीय इतिहास कहीं का भी हो, कैसा भी हो, राष्ट्रीय इतिहास का परिचायक होता है।

क्षेत्रीय इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास को ही नहीं, अपितु विश्व इतिहास को भी अपने में समाहित करने में सक्षम रहा है। प्रांतीय रियासतों ने इतिहास को अपने चरमोत्कर्ष शासन से परिपूर्ण किया है। क्षेत्रीय इतिहास अपनी विशिष्ट वैज्ञानिकता के साथ ही लोगों को व्यावहारिक स्तर पर अपनी सहजता एवं आत्मीयता के गुण के कारण स्वीकार है। वर्तमान में क्षेत्रीय इतिहास का जितना अधिक प्रचार-प्रसार एवं लेखन होगा, वह उतना ही शक्तिशाली, विश्वसनीय, व्यापक और सर्वजनप्रिय होगा।

इतिहास की अध्ययन शैली में मालवा, निमाड़, राजस्थान, गुजरात, विदर्भ और ऐसे ही संज्ञावाचक शब्दों को क्षेत्रीयता की परिधि में समग्रता के साथ रखने की एक पारंपरिक विधा बन चुकी है। इतिहास में जातियों के उत्थान और पतन पर क्षेत्र विशेष के संदर्भ वहाँ के जातीय संगठन के रूप में अपनी पहचान निर्मित करते हैं। क्षेत्रीयता में जब राज्य की सीमा रेखाएँ पृष्ठांकित होती है, तब रेखाओं के आसपास निवासरत् समाज के अस्तित्व अपना रूप बदल लेते हैं।[13]

वस्तुतः क्षेत्रीयता की स्पष्ट अवधारणा के लिए समग्र दृष्टिकोण अथवा समझ के दायरे निश्चित करने के लिए भौगोलिक दृष्टि, भाषागत बोलियाँ एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य, सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमानित समरूपता को भी मूल्यांकित किया।

क्षेत्रीय इतिहास की अवधारणा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस क्षेत्र के इतिहासकारों, अभिलेखों, स्मारकों, रियासतों आदि का ज्ञान अर्जित करना चाहिए। यहां तक कि आत्मकथाएँ भी इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

भारतीय इतिहास की यदि बात की जाये तो इसको तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1. प्राचीन भारत का इतिहास,

2. मध्यकालीन भारत का इतिहास,

3. आधुनिक भारत का इतिहास।

[12] Ibid. pp 778

[13] मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद: राजीव गांधी की स्मृति में. विज्ञान भवन नई दिल्ली, 1995, pp 181

यह एक संयोग की बात है कि भारत पर कभी भी किसी एक शासक ने शासन नहीं किया। विभिन्न क्षेत्रीय शासकों ने भिन्न-भिन्न समय के दौरान भारत पर शासन किया। बिंबिसार[14], अजातशत्रु[15], उदायिन[16], शिशुनाग वंश[17] आदि सम्राटों के पश्चात् फारसी आक्रमण[18], यूनानी आक्रमण हुए और सिकंदर ने भारत पर शासन किया। तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त शासक बना, अशोक आदि सम्राटों के पश्चात् भारत में 11 वीं शताब्दी में तुर्कों का आगमन हुआ। सातवाहन, शक, पल्लव, आदि छत्र भी स्थापित हुए। इसके पश्चात् दिल्ली के सुल्तानों[19] का काल रहा हो या मुगलों का शासन[20] सम्पूर्ण धरती पर एक शासन कभी भी नहीं रहा। तत्पश्चात् मराठे सत्ता[21] में आए तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी एवं ब्रिटिशर्स ने भारत को गुलाम बना लिया। कहने का आशय इतना ही है, कि भारत प्रारंभ से ही क्षेत्रीय स्तर पर विभाजित है। इसलिए क्षेत्रीय इतिहास ही राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर लेखन को प्रभावित करता है।

यदि वर्तमान समय में भी क्षेत्रीय इतिहास को समग्र इतिहास के पूरक नहीं माना गया, तो इतिहास अधूरा ही माना जाएगा।

दार्शनिक दृष्टि से विचार करें अथवा वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें, क्षेत्रीय इतिहास के महत्व को हम नकार नहीं सकते। इतिहास का विकास उसके क्षेत्र में हुये विकास द्वारा ही परिलक्षित होता है। यदि राष्ट्रीय इतिहास में क्षेत्रीय इतिहास को उपेक्षित भी किया जाये, तो भी इसके महत्व को कम नहीं किया जा सकता।

उपसंहार

आज क्षेत्रीय इतिहास लेखन की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है। क्षेत्रों में स्थित प्राचीन रियासतों के ऐतिहासिक यथार्थ के लुप्त होने पर भटकाव बढ़ गया है और इसी क्षेत्रीय इतिहास के अध्ययन एवं लेखन में संकुचन आ गया है। वर्तमान में इतिहासकारों को स्रोतों के प्रति सजग रहना चाहिए तथा जो भी मौलिक स्रोत उन्हें प्राप्त हों उन्हें संरक्षित कर लेना चाहिए। उल्लेखनीय है, कि मात्र स्तुति से इतिहास की जड़ें मजबूत नहीं हो सकती, हमें अपने अतीत को समालोचना परक दृष्टि से देखना होगा, तभी इतिहास का यथार्थ पकड़ में आ सकेगा। क्षेत्रीय इतिहास के व्यापक प्रचार में अतीत के प्रति समालोचनात्मक दृष्टि का होना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है, क्योंकि इतिहासकार मात्र अतीत का लेखन ही नहीं करता, बल्कि भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करता है। अतः इतिहास लेखन में इतिहासकार के दायित्व का निर्वहन आसान नहीं है। वर्तमान का समय कई विशिष्ट परिस्थितियों के लगाव से जुड़ा हुआ है। यह कहने की आवयकता नहीं है, कि आज का दौर प्रतिस्पर्धा

[14] 554 ई. पू 493 ई. पू. शासनकाल

[15] 493 ई. पू. 461 ई. पू. शासनकाल

[16] 461 ई. पू. 445 ई. पू. शासनकाल

[17] 412 ई. पू. 345 ई. पू. शासनकाल

[18] पाण्डे विपिन चन्द्र. प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, 1991, pp 333

[19] 1206-1526 ई. (स्पेक्ट्रम से संदर्भित संस्करण 2005)

[20] 1526-1707 ई. (स्पेक्ट्रम से संदर्भित संस्करण 2005)

[21] 1680-1718 ई. (लगभग) (स्पेक्ट्रम से संदर्भित संस्करण 2005)

का मंच है, जिसमें उसे सम्मान मिलता है, जो उस प्रतिस्पर्धा का सफल भागी है। इसी दौड़ में क्षेत्रीय इतिहास समग्र इतिहास की प्रेरणा बनकर प्रतिस्पर्धा में अपना स्थान कायम करे, यही क्षेत्रीय इतिहासकार का प्रमुख दायित्व है। क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन हमें अपनी अतीत की क्षमता से परिचित कराता है। साथ ही, इतिहास का मनन एवं मंथन भविष्य के लिये संकेत पाने के प्रयोजनार्थ भी किया जाता है।

हम वर्तमान की अनेक समस्याओं का समाधान इतिहास के गर्भ में ढूँढ सकते हैं, परंतु इतिहास को वृहत् स्वरूप दिये बिना ऐसा संभव नहीं होगा। यह संतोष की बात है, कि आज क्षेत्रीय इतिहास के महत्व को समझा जा रहा है। प्रारंभ में यह मात्र राजनीतिक एवं कूटनीतिक हुआ करता था, किंतु आज इसमें अर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष भी समाविष्ट है। साहित्य सम्राट प्रेमचंद्र ने कहा है - "आशा, उत्साह की जननी है। आशा से तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है।"
स्वेट मार्डेन ने ठीक ही कहा है "आशा ही मानव जीवन का आधार है। सारा संसार ही आशा के कंधो पर टिका हुआ है।"

संदर्भ ग्रंथ:

- An Essay on the Civilisations of India, China & Japan : Dickinson, G. Lowes (Goldsworthy Lowes), 1862-1932, Internet Archive, 1914 https://archive.org/details/essayoncivilisat00dickiala/page/15/mode/1up
- Govind Chandra Pandey, इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धांत, Hindi (Rajasthan Hindi Granth Academy, 2003)
- Jharkhande Chaube, इतिहास दर्शन, Hindi (Vishwavidhyalaya Prakashan)
- K.A. Nivami, "Punjab History Conference (Patiyala, 1973)," अध्यक्षीय भाषण (Patiyala, India).
- B.R. Grovar, "Punjab History Conference (Patiyala, 1985)," अध्यक्षीय भाषण (Patiyala, India).
- Jyoti Joshi, मध्य भारत के अग्रणी इतिहासकार एवं उनका इतिहास दर्शन, Hindi (International Educational Applied Journal).
- महाराजरामसुखदासजी, श्री मद्भागवत गीता (सहायक संजीवनी,संवत 2047)
- मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद: राजीव गांधी की स्मृति में (विज्ञान भवन नई दिल्ली, 1995).

- लोकजीवन और साहित्य डॉ. रामविलास शर्मा, संस्करण 1955
- अमृतानुभव, ज्ञानेश्वरविरचित पृ. 129
- पाण्डे विपिन चन्द्र, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, 1991).
- स्पेक्ट्रम
- जैन एण्ड माथुर, आधुनिक विश्व इतिहास 1500 से 2000, जैन प्रकाशन मंदिर, संस्करण जनवरी 2005.